अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

'गोदान': सामाजिक समस्याओं का दर्पण

डॉ कामना कौशिक
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी
वैश्य महाविद्यालय भिवानी

शोध सार

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के आकाश में एक ध्रुवतारे के समान हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज और जीवन की वास्तविकताओं का दर्पण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में उन समकालीन समस्याओं का चित्रण किया, जिनसे व्यक्ति प्रतिदिन दो-चार होता है। प्रेमचंद एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो भेदभाव के अभिशाप से मुक्त हो, जहाँ किसी प्रकार का शोषण न हो, और मनुष्य की पहचान संपत्ति और जाति के आधार पर न हो। 'गोदान' में प्रेमचंद का यहीं उद्देश्य प्रमुखता से व्यक्त हुआ है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण करना, उनके शोषण का जीवंत चित्र प्रस्तुत करना और उनकी दयनीय स्थिति से समाज को परिचित कराना। किसान का शोषण कौन करता है और इसके लिए समाज में कौन-कौन लोग उत्तरदायी हैं? इन सभी का सजीव चित्रण 'गोदान' में किया गया है। उपन्यास केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है बल्कि जीवन की सच्चाइयों और यथार्थ को उजागर कर हमें सोचने-विचारने को विवश करता है, संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करते हुए उसके समाधान के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। 'गोदान' में वर्णित समस्याओं का चित्रण करते हुए उनके समाधान का मार्ग स्पष्ट करना ही इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

बीज शब्द: कृषक समाज, शोषणकारी मान्यताएँ, ग्रामीण जीवन यथार्थ, पूंजीवादी व्यवस्था, सेवा का आदर्श, नारी का दृढ़ संकल्पित एवं विद्रोही स्वरूप, संगठन की उपयोगिता।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

भूमिका

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के एक ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं समझा, बल्कि इसे समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर करने और लोगों में जागरूकता लाने का एक माध्यम माना। उनकी दृष्टि बहुत साफ थी और प्रगतिशीलता उनकी रग-रग में समाई हुई थी। धन को उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया और आजीवन साहित्य सेवा में लगे रहे। 'गोदान' उनका सबसे लोकप्रिय और कालजयी उपन्यास है, जिसे किसानों का महाकाव्य भी कहा जाता है। इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय समाज, विशेषकर ग्रामीण जीवन और किसानों की समस्याओं का गहराई से चित्रण किया है।

(1) कृषक जीवन की विसंगतियों का चित्रण

'गोदान' की रचना कृषक जीवन से जुड़ी समस्याओं को चित्रित करने के लिए की गई है। होरी, कृषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। उसके जीवन की 'ट्रेजेडी' हर किसान के जीवन को प्रस्तुत करती है। जब भारत में जमींदारी प्रथा थी, तब किसान उसके शिकंजे में फंसा हुआ था। जमींदार, कारकुन, पटवारी, सूदखोर, महाजन आदि उसका शोषण करते ही हैं, इनके अतिरिक्त पुलिस, व्यापारी, धर्म के ठेकेदार भी उसका शोषण करते हैं। यह कैसी विडंबना, कैसा विरोधाभास है कि जो किसान सारे विश्व के लिए अन्न उपजाता है, वही खुद भूखा है, उसकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि किसी-किसी दिन उसे अन्न का एक दाना तक मयस्सर नहीं होता। यह भी विडंबना ही है कि अपने शोषकों के बारे में होरी जैसा किसान अच्छी तरह जानता है, फिर भी, रूढ़ियों और संस्कारों से बंधा हुआ होने के कारण वह उनके प्रति क्रोधित नहीं हो पाता, इस शोषण के लिए वह अपने भाग्य को ही दोषी मानता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि होरी के ऐसा मानने के बावजूद, उसका पुत्र 'गोबर' अपने पिता की इस अवधारणा से सहमत नहीं है। वह इस बात को जानता है कि "भगवान तो सबको बराबर बनाता है। यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।" किसानों

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

के इस शोषण का कारण है उनके संस्कार, रूढ़िवाद और संगठन का अभाव। वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं और इसलिए बैलों की तरह जमींदारों के हल में जुते रहते हैं।

जमींदार को किसान से लगान वसूल करने का हक है, किंतु वे नाजायज रूप में नजराना लेते हैं और किसानों से बेगार कराते हैं। रायसाहब अमरपाल सिंह जैसे लोग किसानों के शुभेच्छु बनते हैं, किंतु स्वार्थ नहीं छोड़ सकते, उनकी कथनी और करनी में अंतर है। यही कारण है कि मेहता इस बात को समझते हुए रायसाहब से कहते हैं- "मानता हूँ, आपका अपने असामियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव है, मगर प्रश्न यह है कि उसमें स्वार्थ है या नहीं। इसका एक कारण क्या यह नहीं हो सकता कि मद्धम आँच में भोजन स्वादिष्ट पकता है? गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा कहीं अधिक सिद्ध हो सकता है। मैं तो केवल इतना जानता हूँ, या तो साम्यवादी हैं या नहीं हैं। हैं तो उसका व्यवहार करें, नहीं हैं तो बकना छोड़ दें। मैं किसी नकी जिंदगी का विरोधी हूँ। अगर मांस खाना अच्छा समझते हो तो खुलकर खाओ। बुरा समझते हो, तो मत खाओ, लेकिन अच्छा समझना और छिपकर खाना, यह मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो इसे कायरता भी कहता हूँ और धूर्तता भी, जो वास्तव में एक है।" इस संवाद के माध्यम से प्रेमचंद हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि बुद्धिजीवी लोग रायसाहब जैसे रंगे सियारों की वास्तविकता से अच्छी तरह परिचित हैं। शहर के मेहता और गाँव के गोबर जैसे लोग ही इस शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद कर समाज को इस अभिशाप से मुक्ति दिला सकते हैं।

(2) शोषण के विविध रूपों का चित्रण

किसान का शोषण जमींदार तो करता ही है, किंतु इस शोषण चक्र में और भी कई लोग शामिल हैं। गाँव के महाजन और साहूकार भी किसान की मजबूरी का लाभ उठाकर ऊँची दर पर ब्याज वसूल करते हैं। साहूकार के सूद की दर एक आना रुपया से लेकर दो आना रुपया तक है, जो 75 प्रतिशत वार्षिक से 150 प्रतिशत तक जा पहुँचती है, किंतु किसान मजबूर है, कर्ज लेने को विवश है, कभी खाद के लिए, कभी बीज के लिए, कभी बैल के लिए तो कभी लगान चुकाने के लिए, तो कभी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

सामाजिक दंड की भरपाई के लिए। होरी कहता है "कितना चाहता हूँ कि किसी से एक पैसा कर्ज न लूँ, लेकिन, घर का कष्ट उठाने पर भी गला नहीं छूटता।"

जमींदार के कर्मचारी, कारकुन, कारिंदा तथा सरकार के पटवारी आदि भी किसान का शोषण करते हैं। पुलिस के गंडासिंह जैसे थानेदारों की मिलीभगत से गाँव के मुखिया भी किसान से मिली रिश्वत के पैसों में अपना हिस्सा बँटाते हैं।

समाज और धर्म भी किसान का शोषण करने में पीछे नहीं हैं। झुनिया को घर में आश्रय देने पर गाँव के भाग्यविधाताओं ने 100 रुपए दंड और बीस मन अनाज जुर्माने के रूप में वसूल किया। दातादीन जैसे धर्म के ठेकेदार भी किसान का शोषण करते हैं। मृत्यु के समय पर भी होरी से गोदान की अपेक्षा करने वाले ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार समाज के मुँह पर तमाचा मारते हुए से प्रतीत होते हैं। जो व्यक्ति जीवनपर्यंत एक गाय का जुगाड़ अपने लिए नहीं कर सका, उससे मरते समय गोदान के लिए कहना कहाँ का न्याय है पर दातादीन को इससे क्या?

(3) पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का संकल्प

'गोदान' में प्रेमचंद ने पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का संकल्प व्यक्त किया है। खन्ना पूंजीपतियों के प्रतिनिधि मात्र हैं। शोषण की प्रक्रिया नगर और गाँव में समानांतर रूप से चलती है। गाँव में जमींदार किसान का शोषण करता है, तो नगर में मिल मालिक और पूंजीपति मजदूर का शोषण करके अपनी सोने की लंका खड़ी करते हैं।

प्रेमचंद को यह स्पष्ट भान हो रहा था कि यह शोषण अब अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं है। रायसाहब को भी इसका आभास हो गया था कि यह शोषण अब अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं है और जमींदारी प्रथा अब समाप्त होने वाली है, वे कहते हैं- "लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है।" साथ ही साथ प्रेमचंद ने यह भी संदेश दिया है कि पूंजी पर अहंकार करना ठीक नहीं है, क्योंकि पूंजी क्षणभंगुर होती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

(4) सेवा का आदर्श

प्रेमचंद ने 'गोदान' में सेवा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए जो विचार व्यक्त किए हैं, वे लोक कल्याण की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी हैं। दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका सम्मान नहीं है, अपितु उसकी दौलत का सम्मान है। सच तो यह है कि दौलत ज्यादातर व्यक्तियों में अहंकार उत्पन्न कर देती है और उसके हृदय में सेवा, करुणा जैसी सद्वृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। प्रेमचंद ने 'गोदान' के पात्रों के माध्यम से सेवा के महत्व को प्रतिपादित किया है। सेवा और परोपकार में मेहता जी का दृढ़ विश्वास है, मालती भी उन्हीं की प्रेरणा से अपने स्वभाव को बदल लेती है, अब उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया है। गरीबों को बिना फीस लिए दवा देती है। वह सेवा का आदर्श प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद सेवा को कर्मयोग कहते हैं। नारी को भी अपने व्यक्तिगत जीवन में सेवा धर्म अपनाने का सुझाव देते हुए वे कहते हैं- "सच्चा आनंद, सच्ची शांति केवल सेवा व्रत में है। वही अधिकार का स्रोत है, वही शक्ति का उद्गम है।"

(5) सामाजिक क्रांति में नारी का योगदान

प्रेमचंद की मान्यता है कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए नारी को अपनी भूमिका का निर्वाह सही ढंग से करना होगा, नारी की सहायता के बिना सामाजिक क्रांति असंभव है। मेहता जी ने नारी के संबंध में जो विचार 'गोदान' में व्यक्त किए हैं, वे इसी धारणा को पुष्ट करते हैं।

प्रेमचंद ने 'गोदान' में धनिया के रूप में एक ऐसे नारी पात्र की परिकल्पना की है जो अपनी दृढ़ता, साहस और कर्मठता से समाज को दिशा देती है। वह एक साथ सामाजिक रूढ़ियों, अन्याय और शोषण से जूझती है और अपने लौकिक व्यक्तित्व पर आंतरिक मृदुता के कारण 'गोदान' की सर्वाधिक जीवंत नारी पात्र बन जाती है।

धनिया का चरित्र भारतीय नारी के उस रूप का प्रतिनिधित्व करता है जो सदियों से सामाजिक बंधनों में जकड़ी होने के बावजूद अपने भीतर अदम्य साहस और शक्ति छिपाए हुए है। वह पति के साथ कंधे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

से कंधा मिलाकर काम करती है, घर-परिवार की जिम्मेदारी निभाती है, और साथ ही साथ समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज भी उठाती है।

धनिया की दृढ़ता और साहस का परिचय तब मिलता है जब वह अपने पति होरी के साथ मिलकर जमींदार के अत्याचारों का सामना करती है। वह किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानती है और अपने परिवार को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करती है।

धनिया की कर्मठता का उदाहरण तब देखने को मिलता है जब वह अपने पति के साथ मिलकर खेती-बाड़ी का काम करती है। वह दिन-रात मेहनत करती है और अपने परिवार को पालने में कोई कसर नहीं छोड़ती है।

धनिया की आंतरिक मृदुता का परिचय तब मिलता है जब वह गरीबों और असहायों की मदद करती है। वह एक दयालु और सहयोगी महिला है जो दूसरों के दुखों को समझती है और उनकी मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है।

'गोदान' में धनिया का चरित्र प्रेमचंद की नारीवादी सोच का प्रतीक है। प्रेमचंद यह मानते थे कि नारी में समाज को बदलने की अपार क्षमता होती है। उन्होंने धनिया के माध्यम से यह संदेश दिया है कि नारी को अपनी शक्ति को पहचानना चाहिए और समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

'गोदान' में धनिया का चरित्र सामाजिक क्रांति में नारी के योगदान का एक सशक्त उदाहरण है। धनिया एक ऐसी महिला है जो अपनी दृढ़ता, साहस, कर्मठता और आंतरिक मृदुता के बल पर समाज को एक नई दिशा देती है। वह प्रेमचंद की नारीवादी सोच का प्रतीक है और आज भी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

2. गोदान के उद्देश्य

प्रेमचंद जी के उपन्यास 'गोदान' के कई उद्देश्य थे, जिनमें से कुछ मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

भारतीय कृषक के संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति: गोदान में ग्रामीण जीवन की दो कहानियाँ हैं - एक ग्रामीण जीवन की और दूसरी शहरी जीवन की। इन दोनों कहानियों के पात्र अलग-अलग हैं, लेकिन 'रायसाहब' नामक पात्र ग्रामीण और शहरी कथा के बीच की कड़ी का काम करता है। ग्रामीण परिवेश में किसानों की दशा अत्यंत दयनीय है। उनका शोषण सेठ-साहूकार और जमींदार करते हैं, जिसके कारण वे मजदूर बनने को विवश हो जाते हैं। किसानों की इस दयनीय दशा का मूल कारण उनकी अज्ञानता है। उनकी रूढ़िवादिता, भाग्यवादिता और अज्ञानता उन्हें प्रगति के पथ पर चलने से रोकती है। प्रेमचंद जी ने 'गोबर' के चरित्र के माध्यम से तत्कालीन किसानों के समक्ष एक प्रगतिशील युवक का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

सामाजिक शोषकों का यथार्थ चित्रण: 'गोदान' उपन्यास की कथावस्तु शोषणकारी शक्तियों की स्थिति को दर्शाती है। प्रेमचंद जी ने इस स्थिति का मार्मिक चित्रण यथार्थ के धरातल पर किया है। शोषणकारी शक्तियों के विविध रूप हैं। छोटे स्तर पर महाजन, साहूकार, पटवारी, कारिंदा, कारकून और अन्य छोटे कर्मचारी किसानों का शोषण करते हैं, वहीं दूसरी तरफ समाज के तथाकथित गणमान्य लोग जैसे- पुरोहित, जमींदार, थानेदार और गांव के मुखिया भी इन किसानों का शोषण करने में पीछे नहीं रहते।

समाजवादी व्यवस्था की स्थापना पर बल: प्रेमचंद जी प्रगतिवादी विचारधारा से ओत-प्रोत थे। वे समाज में व्याप्त असंगतियों को दूर करना चाहते थे। उन्होंने 'खन्ना' जैसे पूंजीपति के चरित्र के माध्यम से मजदूरों के शोषण को उजागर किया। 'गोविंदी' का चरित्र एक सशक्त नारी का प्रतीक है, जो पूंजीवाद के खिलाफ आवाज उठाती है। प्रेमचंद जी ने 'गोदान' के माध्यम से एक ऐसे समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था, जो शोषण और अन्याय से मुक्त हो।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

क्रांतिधर्मी नारी चरित्रों की सृष्टि: प्रेमचंद जी ने 'गोदान' में कई सशक्त नारी चरित्रों की सृष्टि की है, जैसे- धनिया, मालती, गोविंदी, झुनिया, सिलिया, सोना और रूपा। ये सभी नारियाँ अपने-अपने ढंग से समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाती हैं। मालती एक आधुनिक और प्रगतिशील नारी है, जो डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करना चाहती है। धनिया एक ग्रामीण महिला है, जो अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है और हर मुश्किल का सामना करती है।

पारिवारिक विघटन की समस्या: प्रेमचंद जी ने 'गोदान' में पारिवारिक विघटन की समस्या को भी उठाया है। उन्होंने होरी और उसके भाइयों के अलग होने, पिता-पुत्र के बीच मतभेद, पति-पत्नी के संबंधों में तनाव और बेटियों की समस्याओं का चित्रण किया है।

विवाह संबंधी समस्याएँ: 'गोदान' में विवाह संबंधी समस्याओं का भी वर्णन है। दहेज के कारण विवाह में बाधा, बाल विवाह, विधवा की समस्या, अनमेल विवाह और वृद्ध विवाह के उदाहरण इस उपन्यास में देखने को मिलते हैं।

दिखावा/प्रदर्शनीयता की समस्या: 'गोदान' में दिखावा और प्रदर्शन की समस्या को भी उजागर किया गया है। गांव में होरी अपनी प्रतिष्ठा के लिए गाय पालना चाहता है, जबकि शहर में रायसाहब अपनी झूठी शान बनाए रखने के लिए कर्ज में डूबे रहते हैं।

3. निष्कर्ष

'गोदान' में प्रेमचंद की दृष्टि अत्यंत व्यापक रही है। कृषक जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं का निरूपण करने के साथ-साथ उन्होंने समाज की अन्य समस्याओं पर भी विहंगम दृष्टि डाली है तथा उन सबका निराकरण करने हेतु उचित सुझाव भी दिया है। इस प्रकार निश्चित रूप से 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन का आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दर्पण कहा जा सकता है, जो न केवल तत्कालीन समाज की समस्याओं को उजागर करता है बल्कि उनके समाधान के लिए मार्ग भी प्रशस्त करता है। यह उपन्यास भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन, उनकी मानसिकता और उनके अंतर्संबंधों का एक व्यापक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

और सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत करता है। 'गोदान' प्रेमचंद की एक अमर कृति है, जो हिंदी साहित्य में सदैव प्रासंगिक रहेगी।

'गोदान' एक उद्देश्यपरक रचना है, जिसमें प्रेमचंद जी ने समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर करने के साथ-साथ उनके समाधान भी सुझाए हैं। उन्होंने एक ऐसे समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था, जो अन्याय, अत्याचार, शोषण और सामाजिक विरूपताओं से रहित हो। 'गोदान' हिंदी साहित्य का एक ऐसा उपन्यास है, जो आज भी प्रासंगिक है और समाज को नई दिशा देने का काम करता है।

संदर्भ सूची

1-मिश्र, 'प्रभाकर', चंद्रभानु, प्रेमचंद की कहानी कला, नंदन प्रकाशन, विद्यामंदिर, रानी कटरा, लखनऊ-3, प्रथम संस्करण।

2-नीलमणि, प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों: एक समीक्षा, राही प्रकाशन, कृष्ण प्रकाश रोड, गया (बिहार), प्रथम संस्करण – 1962।

3-प्रेमचंद, गोदान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली - 110002, संस्करण - सन 2012।

4-मिश्र, डॉ. सत्यप्रकाश, 'गोदान' का महत्व, सुमित्र प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2008।

5-इतिहास, डॉ. नगेंद्र, 33वां संस्करण - 2007, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।

6-प्रो. डी. पी. चंद्रवंशी, "हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान", रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 2015।

7-"प्रेमचंद की हिंदी कहानी, हिंदी कहानी के सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानी, मुंशी प्रेमचंद, हिंदी साहित्य सबके लिए। अभिगमन तिथि: 19 दिसंबर, 2017।